धारीलाल घासीराम शोधपीठ
भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 5-843

IODH SAMALOCHAN

A TERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Vol. : 11, Issue : 3(2)

Aug. : 2024 (Spl. Issue)

शोधार्थी विशेषांक 2024

Special Issue Editor :
Dr. Parveen Kumari

Editor :
Dr. Naresh Sihag 'Bohal'
Advocate

Executive Editor :
Dr. Varsha Rani

18.	हिन्दी कथा साहित्य में नेत्रहीन पात्र	डॉ० दिलीप राम, सुनील कुमार	88–94
19.	Contextualizing Dance in Heritage Spaces : Rani Ki Vav, Gujarat & Vitthala Temple, Hampi	Jhankriti Jain	95-103
20.	बौद्ध स्तूपों पर अंकित मांगलिक प्रतीकों का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव	104–108
21.	मंजूर एहतेशाम की कथा साहित्य में मुस्लिम समाज की स्थिति	आसिया बेगम एमडी. अजमतुल्ला	109–111
22.	नक्सलवाद : विचार एवं खूनी संघर्ष के 57 साल	डॉ. शक्ति जायसवाल	112–122
23.	राजभाषा हिंदी का संविधान में प्रावधान	लीला धर सहू	123–128
24.	Importance of Achievement Motivation in Reducing Academic Anxiety : A Qualitative Study	Dr. Seema	129-138
25.	दिलो दानिश : नारी संघर्ष का दस्तावेज़	डॉ. सरिता चौहान	139–144
26.	सोशल मीडिया : स्वरूप एवं भूमंडलीकरण पर प्रभाव	डॉ. सतीश सिंह यादव	145–148
27.	वेश्यावृत्ति, भूख और यशपाल की कहानियाँ	राखी	149–156
28.	ललित निबंध : संकल्पना एवं स्वरूप	सतीश कुमार भारद्वाज	157–162
29.	महिला शिक्षा के प्रति अभिमुखीकरण	फरहा नाज, डॉ. राजेश कुमार सिंह	163–170
30.	राजस्थान के पंचायतीराज में महिला सहभागिता की प्रारम्भिक स्थिति	Dr. Anita Redu	171-176
31.	DETERMINANTS OF BANKING HABITS OF PEOPLE IN HISAR DISTRICT	Satpal Singh, Dr. Madhu	177-185

गिरधारीलाल घासीराम शोध पीठ द्वारा भारत, नेपाल से प्रकाशित ISSN : 2348-5639
SHODH SAMALOCHAN
AN INTERNATIONAL PEER-REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

महिला शिक्षा के प्रति अभिमुखीकरण

फरहा नाज, शोध छात्रा,
डॉ. राजेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह रा0स्ना0 महाविघालय, रूद्रपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

प्रस्तावना :-

शिक्षा जीवन का वह महत्वपूर्ण अंग है, जो हमें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक अनुशासित, संयम और प्रगतिशील बनाये रखती है। शिक्षा मनुष्य को ज्ञानवान बनाती है। इसीलिए विद्याहीन मनुष्य को पशुवत् कहा गया है।[1] बुनियादी शिक्षा मनुष्य की पढ़ने और लिखने की क्षमताओं को बेहतर करती है। सामाजिक समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने, दूसरों के साथ बेहतर संवाद करने और बेहतर जानकारी प्राप्त करने की स्वतंत्रता देती है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिससे मनुष्य में ज्ञान का समावेश होता है। यह मनुष्य के अंदर अच्छे विचारों को जन्म देती है और मनुष्य को जीवन जीने के लिए सही मार्ग प्रशस्त करती है। कोई व्यक्ति उसी अवस्था में दूसरे व्यक्ति से आगे बढ़ सकता है जब उसकी समझ और मस्तिष्क शिक्षा द्वारा तीव्र और उच्च होती है।

आधुनिक समाज में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण संसाधन और समानता के लक्ष्य को पाने का साधन समझा जाता है। शैक्षिक अवसरों की समानता के सन्दर्भ में शिक्षा से समताकारी बनने की आशा की जाती है। शिक्षा व्यक्ति के सांस्कृतिक वातावरण के अंतर्गत उसके विकास का उपकरण है।[2] समाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महिला शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, विशेषकर भारतीय समाज में महिलाओं के लिए शिक्षा का महत्व अधिक है क्योंकि महिला आधे समाज का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षा उन्हें समाज में स्वतंत्र और सम्मानित बनाती है। इस शोध पत्र के माध्यम से महिला शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है तथा साथ ही शिक्षा के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

शोध अभिकल्प :-

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड के ऊधमसिंह नगर जनपद के रुद्रपुर तहसील के पत्थरचट्टा और सैनिक पुनर्वास कालोनी के निवासियों से संगृहीत आकड़ों से महिला शिक्षा का अध्ययन किया गया है। इससे सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु पूर्ण रूप से गूगल फॉर्म का प्रयोग किया गया है। गूगल फॉर्म में इस प्रकार प्रश्नों को रखा गया है, जिसका उत्तर वे आसानी से दे सकें। इस हेतु गूगल फार्म का निर्माण अत्यंत सावधानी पूर्वक किया गया है। प्रश्नों को सरल एवं स्पष्ट बनाया गया है। साथ ही द्वितीयक आकड़ों के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्र, पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों का प्रयोग किया गया है।

महिला शिक्षा :-

एक पढ़ी–लिखी महिला न केवल अपने लिए बल्कि अपने परिवार और समाज के लिए भी एक महत्वपूर्ण साथी बनती है। वह अपने सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकती है और अपने परिवार के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

सारणी संख्या- 01

महिला शिक्षा को आवश्यक मानने के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	बालिका शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	25	100.00
2	नहीं	00	00.00
3	**योग**	**25**	**100.00**

उपयुक्त आकड़ों से ज्ञात है कि अधिकांश उत्तरदाता महिलाओं की शिक्षा को आवश्यक मानते हैं।

पुरूष और महिला की शिक्षा :-

समाज में समानता और समरसता लाने के लिए पुरुष और महिला दोनों का समान रूप से शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। शिक्षा जहाँ महिलाओं को स्वावलंबी बनाती है तथा उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए शक्ति प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर पुरुषों को भी उनके समाजिक, आर्थिक और पारिवारिक दायित्वों को निभाने में मदद करती है। सर्व शिक्षा अभियान भारत का सबसे महत्वाकांशी शिक्षा कार्यक्रम है जिसकी शुरुआत 2001 में की गई थी, इसका उद्देश्य 6 से 14 वर्ष के आयु के सभी बच्चों को सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कराना है।[3]

सारणी संख्या- 02

पुरुष और महिला की शिक्षा को समान महत्व देने के विषय में उत्तरदाताओं का विवरण

क्रम संख्या	पुरुष व महिला शिक्षा को महत्व	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	24	96.00
2	नहीं	01	04.00
3	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी इंगित करती है कि 84 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि पुरुष और महिला शिक्षा को समान महत्व देना चाहिए तथा 04 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं।

लड़कियों को अपनी इच्छा के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता :-

लड़कियों की शिक्षा को लेकर समाज में विभिन्न मान्यताएं और प्रतिबंध होते रहे हैं। इसे दूर करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम लड़कियों को उनकी इच्छानुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता और स्वाधीनता प्रदान करना है।

सारणी संख्या- 03

लड़कियों को अपनी इच्छा के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता का वितरण

क्रम संख्या	शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	18	72.00
2	नहीं	07	28.00
3	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी संख्या– 03 में प्रदर्शित आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 72 प्रतिशत उत्तरदाता स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने की पूरी स्वतंत्रता देते हैं। तथा 28 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं।

पढ़ी-लिखी महिला का पूरे परिवार को शिक्षित करना :-

परिवार को भारतीय समाज में प्रथम पाठशाला माना जाता है और महिला उस पाठशाला की प्रथम शिक्षिका है। पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था कि लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है तथा लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही स्त्री परिवार को स्वर्ग बनाती है। महिला शिक्षा से सम्पूर्ण समाज का विकास होता है।[4]

सारणी संख्या- 04

पढ़ी-लिखी महिला पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	पढ़ी-लिखी महिला का पूरे परिवार को शिक्षित करना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	24	96.00
2	नहीं	01	04.00
3	**योग**	**25**	**100.00**

सारणी से ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि एक पढ़ी–लिखी महिला पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है।

आर्थिक और सामाजिक उन्नति :-

महिला शिक्षा का महत्व आर्थिक और सामाजिक उन्नति में विशेष रूप से होता है। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो वह विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर पाने में सक्षम होती हैं और घर–परिवार की आर्थिक सहायता करने में अपना योगदान देती हैं। इसी विषय में उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछा गया है।

सारणी संख्या- 05

शिक्षित महिलाएं परिवार की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में सहायक है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	शिक्षा परिवार की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में सहायक	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	21	84.00
2	नहीं	04	16.00
3	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि अधिकतर उत्तरदाता मानते हैं कि शिक्षा परिवार की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में सहायक होती है।

अच्छे संस्कार :-

अच्छे संस्कार व्यक्ति की व्यक्तित्विकता को विकसित करते हैं और उसे अपने समाज में एक प्रेरणा स्तर पर उच्च स्थान प्राप्त करने में मदद करते हैं। ये संस्कार व्यक्ति के व्यक्तिगत, परिवारिक, और सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। शिक्षित महिलाएं अधिक ज्ञान और समझ रखती हैं, जिससे वे अपने बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में सही जानकारी और अच्छे संस्कार प्रदान कर सकती हैं।

सारणी संख्या- 06

शिक्षित महिला बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकती है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	शिक्षित महिला बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकती है	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	17	68.00
2	नहीं	07	28.00
3	कुछ हद तक	01	04.00
4	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 68.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि शिक्षित महिला बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकती है। 28.00 प्रतिशत उत्तरदाता नहीं मानते हैं और 04.00 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ हद तक इस बात से सहमत है।

रूढ़िवादी विचारधारा :-

पुरानी सोच व बीते समय की स्थापित प्रथाओं, संस्कृतियों और धार्मिक विचारधाराओं के कारण अधिकतर लोग लड़कियों को शिक्षा देना अच्छा नहीं समझते हैं। यह विचारधारा नए और परिवर्तनशील विचारों और प्रक्रियाओं को स्वीकार करने में बाधा डालती है, जिससे महिला को शिक्षा से वंचित कर दिया जाता है।

सारणी संख्या- 07

शिक्षा रुढ़िवादी विचारधारा में बदलाव ला सकती है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	रुढ़िवादी विचारधारा में बदलाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	22	88.00
2	नहीं	01	04.00
3	कह नहीं सकते	02	08.00
4	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि 88 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि महिला शिक्षा से रुढ़िवादी विचारधारा में बदलाव आया है। 8 प्रतिशत उत्तरदाता इस विषय में कुछ कह नहीं सकें और 04 प्रतिशत उत्तरदाता ने कहा है कि शिक्षा से रुढ़िवादी विचारधारा में कोई बदलाव नहीं आया है।

महिला अत्याचार :-

भारतीय कानून प्रणाली में घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 एक महत्वपूर्ण कदम है। यह अधिनियम 26 सितंबर 2005 को लागू हुआ था। जो घरेलू हिंसा और परिवारिक हिंसा के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई को प्रोत्साहित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू हिंसा के मामलों में पीड़ित व्यक्तियों की सुरक्षा और सहायता सुनिश्चित करना है।[5]

सारणी संख्या- 08

महिला शिक्षा से महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कमी आई है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	शिक्षा से महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कमी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	20	80.00
2	नहीं	02	08.00
3	कुछ हद तक	03	12.00
4	**योग**	25	100.00

सारणी संख्या–08 के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि अधिकांश 80 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि शिक्षा से महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कमी आई है। 12 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से कुछ हद तक सहमत हैं तथा 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ऐसा नहीं लगता है।

बालिका शिक्षा से समाज में परिवर्तन :-

समाज में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है वह समाज का आधा हिस्सा होती है।

इसलिए उनकी अच्छी शिक्षा से समाज का विकास तो होता ही है, समाज में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं जैसे – परिवार प्लानिंग, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति।

सारणी संख्या- 09

बालिका शिक्षा समाज में परिवर्तन ला सकती के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	बालिका शिक्षा समाज में परिवर्तन ला सकती	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	23	92.00
2	नहीं	00	00.00
3	कह नहीं सकते	02	08.00
4	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त आकड़ों से ज्ञात होता है कि 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि बालिका शिक्षा से समाज में परिवर्तन आता है तथा 08 प्रतिशत उत्तरदाता इस विषय पर कुछ कह नहीं सकते।

शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्यायें :-

बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो उनके शैक्षिक संघर्षों को बढ़ा सकते हैं। इसी विषय में उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या- 10

बालिकाओं को शिक्षा प्रास करने में कोई समस्या का सामना करना पड़ता है के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	15	60.00
2	नहीं	10	40.00
3	**योग**	25	100.00

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से विदित होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं होती है।

सारणी संख्या- 11

यदि हाँ तो कौन - सी समस्या के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	समस्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	धन की	05	33.33
2	रुढ़िवादी विचारधारा	04	26.67
3	यातायात की	02	13.33
4	समय की	01	06.67
5	अन्य	03	20.00
6	**योग**	15	100.00

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से पता चलता है कि शिक्षा नहीं प्राप्त करने में 33.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को धन की समस्या आती है। 26.67 प्रतिशत उत्तरदाता रुढ़िवादी विचारधारा, 13.33 प्रतिशत उत्तरदाता को यातायात की, 06.67 प्रतिशत समय की तथा 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य सस्याओं के कारणवश शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

शिक्षित महिलाएं परिवार के टूटने का कारण :-

शिक्षित महिलाओं के जीवन में सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक परिवर्तन होने के कारण परिवार में विवाद और टूटने की स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। उनकी विचारधारा, अभिप्राय और समय का बदलता रूप पारिवारिक संघर्षों का कारण बन सकता है।

सारणी संख्या- 12

शिक्षित महिलाएं परिवार के टूटने का कारण बन रही हैं के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	परिवार टूटने का कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	04	16.00
2	नहीं	19	76.00
3	कुछ हद तक	02	08.00
4	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षित महिलायें परिवार टूटने का कारण नहीं बन रही हैं। 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षित महिलाओं के कारण परिवार टूट रहा है। 08 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ हद तक इस बात से सहमत है कि शिक्षित महिला परिवार टूटने का कारण है।

भारतीय संस्कार :-

लोगों के जीवन में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कार समाज व परिवार की गहरी पारंपरिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाते हैं।

सारणी संख्या- 13

शिक्षित महिला भारतीय संस्कारों की रक्षा नहीं कर पा रहीं हैं के विषय में उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	भारतीय संस्कारों की रक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	09	36.00
2	नहीं	10	40.00
3	कह नहीं सकते	06	24.00
4	**योग**	**25**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 40.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि शिक्षित महिला

भारतीय संस्कारों की रक्षा नहीं कर पा रहीं हैं। 36.00 प्रतिशत उत्तरदाताओ का मानना है कि शिक्षित महिला भारतीय संस्कारों की रक्षा कर सकने में सक्षम हैं तथा 24.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस बारे में कुछ कह नहीं सकते।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध पत्र में महिला शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत कुल 25 परिवारों से गूगल फॉर्म के माध्यम से कुछ प्रश्न पूछे गये, जिससे एकत्रित आकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता महिलाओं की शिक्षा को आवश्यक मानते हैं तथा उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की पूरी स्वतंत्रता है। सभी उत्तरदाता इस बात से भी सहमत हैं कि महिला शिक्षा परिवार की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में सहायक होती है और यह भी मानते हैं कि एक पढ़ी–लिखी महिला पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है। अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि शिक्षित महिला बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकती है। अधिकतर उत्तरदाता मानते हैं कि महिला शिक्षा से रुढ़िवादी विचारधारा में बदलाव आया है। कुछ उत्तरदाताओं को धन की समस्या के कारण, कुछ को रुढ़िवादी विचारधारा के कारण, कुछ को यातायात तथा समय की समस्या और 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य सस्याओं के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहें हैं। कुछ उत्तरदाताओं का मानना है कि शिक्षित महिलाओं के कारण परिवार टूट रहा है और कुछ उत्तरदाता इस बात से सहमत नहीं है कि शिक्षित महिला परिवार टूटने का कारण है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में महिला शिक्षा की स्थिति संतोषजनक है।

सन्दर्भ-सूची :-

1. विद्या हीन : पशु। नीति शतक – 16, सुभाषित रत्न संगृह– 31.18
2. अम्बस्ट, एन.के. जनजाति शिक्षा : क्षेत्र और सीमाएं, योजना, वर्ष–37, जनवरी–1994, पृ. 63
3. दास, ए. (2007), "सर्व शिक्षा अभियान में हम कितनी दूर आ गए हैं", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 42(1), प्रिंट 21– 23.
4. किशोर, जी, 'महिला शिक्षा विकास कि ओर' योजना– 1994, वर्ष–38, अंक–7, पृ. 30
5. https://tnsocialwelfare.tn.gov.in/en/social&legislations/protection&of&womens&from&domestic&violence&act

EMAIL : drrajeshsingh72@gmail.com, PH- 9454065041

EMAIL : farhanaazrose@gmail.com, PH-6398560422